जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – अप्रैल 2026 ।। अंक – 69 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

चाँदनी ने हुनर से भरी आत्मनिर्भरता की उड़ान (पृष्ठ – 02)

समूह से मिली राह से पाई आत्मनिर्भरता की मंज़िल (पृष्ठ – 03)

जैविक खेती केवल एक विकल्प नहीं, आज की आवश्यकता है (पृष्ठ – 04)

जीविका के साथ उभरता महिला उद्यमिता का सशक्त पारितंत्र

बिहार की मिट्टी में सदियों से श्रम, संघर्ष और संभावनाओं की कहानियाँ लिखती रही हैं। इन्हीं कहानियों को नई पहचान देने का कार्य जीविका ने बीते दो दशक में किया है। जहां कभी ग्रामीण महिलाएँ सीमित संसाधनों और अवसरों के बीच अपने जीवन को आगे बढ़ाने के लिए संघर्ष करती थीं, वहीं आज महिलाएँ आत्मविश्वास के साथ उद्यमी बनकर अपने परिवार और समाज की दिशा बदल रही हैं। यह परिवर्तन केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक और मानसिक स्तर पर भी परिलक्षित हो रहा है।

प्रारंभिक दौर में जीविका का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र के गरीब परिवारों, विशेषकर महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से संगठित करना और उन्हें बचत, ऋण एवं जीविकोपार्जन गतिविधियों से जोड़ना था। समय के साथ यह पहल एक व्यापक दृष्टिकोण के साथ विकसित हुई और आज यह एक सशक्त उद्यमिता विकास के रूप में सामने आई है। यह योजना केवल सहायता देने तक सीमित नहीं है, बल्कि महिलाओं को सक्षम बनाकर और उद्यमिता से जोड़कर आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर करता है।

जीविका का सबसे बड़ा आधार उसका सामुदायिक संस्थागत ढांचा है। इसके अन्तर्गत स्वयं सहायता समूह, ग्राम संगठन और संकुल स्तरीय संघ गठित किए जाते है। ये संस्थाएँ केवल संगठन नहीं, बल्कि ग्रामीण महिलाओं की सामूहिक शक्ति का भी प्रतीक हैं। इन मंचों के माध्यम से महिलाएँ न केवल अपनी समस्याओं को साझा करती हैं, बल्कि सामूहिक निर्णय लेकर आर्थिक गतिविधियों की दिशा तय करती हैं। यही संरचना आज ग्रामीण उद्यमिता की मजबूत नींव बन चुकी हैं।

ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए जीविका ने विभिन्न क्षेत्रों में अवसरों का विस्तार किया है। कृषि, पशुपालन, मत्स्य पालन, हस्तशिल्प, खाद्य प्रसंस्करण और सेवा क्षेत्र जैसे विविध क्षेत्रों में महिलाओं को प्रशिक्षित कर उन्हें उद्यम स्थापित करने के लिए प्रेरित किया है। जीविका दीदी की रसोई, जीविका दीदी का सिलाई घर, मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन, डेयरी गतिविधियाँ एवं साफ़–सफाई जैसे कार्य आज ग्रामीण अर्थव्यवस्था में नई ऊर्जा का संचार कर रही हैं। इन पहलों के माध्यम से महिलाएँ न केवल अपनी आय बढ़ा रही हैं, बल्कि अपने गाँव में ही रोजगार के नए अवसर भी सृजित कर रही हैं।

जीविका का यह मॉडल केवल उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि संपूर्ण मूल्य श्रृंखला को सुदृढ़ करने पर केंद्रित है। उत्पादन, प्रसंस्करण, पैकेजिंग और विपणन, हर स्तर पर संस्थागत सहयोग सुनिश्चित किया जाता है। उत्पादक कंपनियों और सामुदायिक संस्थाओं को बड़े बाजारों और निजी क्षेत्र से जोड़ने के प्रयासों ने ग्रामीण उत्पादों को नई पहचान दी है। अब गाँव में तैयार उत्पाद केवल स्थानीय बाजार तक सीमित नहीं हैं, बल्कि राज्य और देश के अन्य हिस्सों तक भी पहुँच रहे हैं।

वित्तीय समावेशन इस योजना की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। जीविका ने लाखों महिलाओं को बैंकिंग प्रणाली से जोड़कर उन्हें ऋण, बीमा और विभिन्न योजनाओं का लाभ दिलाया है। इससे उद्यम शुरू करने और उसे विस्तार देने में आने वाली आर्थिक बाधाएँ काफी हद तक कम हुई हैं। साथ ही, वित्तीय साक्षरता और व्यवसाय प्रबंधन से जुड़े प्रशिक्षण महिलाओं को अपने उद्यम को बेहतर ढंग से संचालित करने में सक्षम बना रहे हैं।

तकनीक और डिजिटल माध्यमों को भी इस मॉडल में प्रभावी रूप से शामिल किया गया है। डिजिटल प्लेटफॉर्म, डेटा प्रबंधन और ऑनलाइन मार्केटिंग के जरिए ग्रामीण उद्यमों को आधुनिक बाजार से जोड़ा जा रहा है। इससे उत्पादों की पहुँच बढ़ी है और गुणवत्ता में भी सुधार हुआ है। यह बदलाव ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नए युग के अनुरूप ढ़ालने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

जीविका के माध्यम से उद्यमिता विकास के क्षेत्र में उल्लेखनीय कर्य हुआ है। 334 "जीविका दीदी की रसोई" इकाइयों में 5,000 से अधिक जीविका दीदियाँ कार्यरत हैं, जो प्रतिदिन 2 लाख से अधिक अंत:वासी मरीजों को भोजन उपलब्ध करा रही हैं। प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम औपचारिकीकरण योजना के तहत 22,978 सूक्ष्म उद्यम स्थापित किए गए हैं। साथ ही 5,573 कृषि उद्यमी और 35,109 स्टार्टअप ग्राम उद्यमिता कार्यक्रम से जुड़े उद्यमी विभिन्न गतिविधियों में संलग्न हैं। "जीविका दीदी की सिलाई घर" के माध्यम से 40,142 से अधिक महिलाएँ सिलाई कार्य से जुड़ी हैं, जबकि मधुमक्खी पालन से 11,500 से अधिक, बैग क्लस्टर में 42 महिला उद्यमी तथा "जीविका दीदी की नर्सरी" में 987 महिला उद्यमी सक्रिय हैं। इसके अतिरिक्त हस्तशिल्प, पशुपालन, साफ–साफाई एवं अन्य जीविकोपार्जन गतिविधियों से जुड़ी हजारों ग्रामीण महिलाएँ स्वरोजगार के माध्यम से अपनी आय बढ़ाते हुए स्थानीय अर्थव्यवस्था को सशक्त बना रही हैं।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जीविका का यह उद्यमिता विकास योजना केवल आर्थिक प्रगति का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक बदलाव का भी आधार बन रहा है। जब एक महिला उद्यमी बनती है, तो उसके भीतर आत्मविश्वास का संचार होता है, निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है और समाज में उसकी पहचान मजबूत होती है। यह बदलाव परिवार से लेकर पूरे समुदाय तक सकारात्मक प्रभाव डालता है। इस प्रकार, जीविका आज बिहार में उद्यमिता की एक नई कहानी लिख रही है। एक ऐसी कहानी जिसमें सामूहिक शक्ति, आत्मनिर्भरता और सशक्तीकरण की झलक स्पष्ट दिखाई देती है।

मुश्किलों की धूप से सम्मान की छाँव

मुज़फ़्फ़रपुर जिला के मुरौल प्रखंड अन्तर्गत धर्मपुर गाँव की रहने वाली 30 वर्षीय इशमत खातून अर्पण जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य हैं। समूह से जुड़ने से पहले उनका जीवन कठिनाइयों से भरा था। उनके पति टायर दुकान चलाते थे और मौसम आधारित व्यवसाय करते थे। इससे उनके चार सदस्यीय परिवार का भरण–पोषण मुस्किल से होता था। ऐसे में दो बच्चों की पढ़ाई एक बड़ी चुनौती थी।

वर्ष 2010 में जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ना उनके जीवन का महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। स्वयं सहायता समूह के माध्यम से उन्होंने बचत करना सीखा। स्वयं सहायता समूह से ऋण की सुविधा प्राप्त हुई। समूह में मिले प्रशिक्षणों ने उनका आत्मविश्वास बढ़ाया। इशमत ने अपने पति के व्यवसाय बिस्तार के लिए 40,000 रुपये का ऋण लिया, जिससे उनके लिए अपने व्यवसाय का विस्तार करना संभव हुआ।

वर्ष 2024 में उनके पति अचानक लापता हो गए। इससे इशमत के सामने विकट स्थिति पैदा हो गई। उन्होंने अपने पति को ढूंढ़ने को पूरा प्रयास किया, लेकिन सफलता नहीं मिली। पति के लापता हो जाने से इशमत के घर की आय का साधन समाप्त हो गया और वह गंभीर आर्थिक संकटों से जूझने लगी।

इस संकट के समय भी जीविका स्वयं सहायता समूह उनके लिए सहारा बना। ग्राम संगठन की बैठक में उन्हें मुज़फ़्फ़रपुर सदर अस्पताल में सफाईकर्मी की भर्ती की जानकारी मिली। इशमत ने भी इसके लिए आवेदन किया। निर्धारित प्रक्रियाओं का पालन करते हुए दिसंबर 2024 में इन्हें सफाईकर्मी के रूप में चयनित किया गया। इसके बाद इशमत को स्वच्छता और सफाई कार्य संबंधी प्रशिक्षण मिला। वर्तमान में वह वार्ड और आपातकालीन कक्षों की सफाई, बायोमेडिकल कचरे के पृथक्करण और संक्रमण नियंत्रण जैसे कार्यों में योगदान दे रही हैं। इसके लिए उन्हें प्रति माह 8,000 रुपये वेतन मिलता है, जिससे वह परिवार के खर्च और बच्चों की पढ़ाई में सहयोग कर रही हैं। इशमत की कहानी यह बताती है कि सामुदायिक संस्थाएँ महिलाओं को न केवल रोजगार के अवसर देती हैं, बल्कि आत्मविश्वास और सामाजिक सम्मान भी प्रदान करती हैं।

चाँदनी ने हुनर से भरी आत्मनिर्भरता की उड़ान

भोजपुर जिले के बड़हरा प्रखंड अंतर्गत नाथमलपुर पंचायत की रहने वाली चाँदनी कुमारी, हुनरमंद महिला के रूप में अपनी पहचान बनायी हैं। जागृति जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद चाँदनी के जीवन में सकारात्मक बदलाव की शुरुआत हुई। समूह की साप्ताहिक बैठकों में नियमित रूप से भाग लेने से उन्हें विभिन्न सरकारी योजनाओं और स्वरोजगार के अवसरों की जानकारी मिली, जिसने उनके भीतर आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा दी।

मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के अंतर्गत मिली आर्थिक सहायता ने आत्मनिर्भर बनने के उनके सपने को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस योजना के तहत प्राप्त 10 हजार रुपये की राशि एवं अपने जमा–पूँजी से उन्होंने ब्यूटी पार्लर एवं श्रृंगार दुकान शुरू की। स्थानीय स्तर पर ब्यूटी पार्लर खुलने से ग्रामीणों को लाभ मिला। साथ ही, इस व्यवसाय से होने वाली नियमित आय से उनके परिवार की आर्थिक स्थिति बेहतर हो रही है। पहले जहाँ दैनिक खर्चों को लेकर अनिश्चितता बनी रहती थी, वहीं अब आय के एक सुनिश्चित स्रोत ने जीवन में संतुलन और आत्मविश्वास बढ़ा है।

व्यवसाय की सफलता को देखते हुए चाँदनी कुमारी अब इसके विस्तार की दिशा में भी सोच रही हैं। वह भविष्य में दुकान में और अधिक उत्पाद शामिल कर अपने व्यवसाय को सशक्त बनाना चाहती हैं। वह पुनः योजना के अंतर्गत अतिरिक्त सहायता लेने की योजना बना रही हैं।

चांदनी की यह यात्रा स्पष्ट करती है कि सही मार्गदर्शन, वित्तीय सहयोग और व्यक्तिगत संकल्प के साथ ग्रामीण महिलाएँ न केवल आत्मनिर्भर बन सकती हैं, बल्कि अपने समुदाय में प्रेरणा स्रोत भी बन सकती हैं।

समूह से मिली राह से पाई आत्मनिर्भरता की मंज़िल

जमुई जिले के जमुई सदर प्रखंड अंतर्गत काकन पंचायत के काकन गाँव की निवासी आशा देवी, जो तुलसी स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हैं, आज आत्मनिर्भरता की एक प्रेरक उदाहरण बनकर उभरी हैं। बड़े परिवार की जिम्मेदारियों के कारण उनके लिए घर का खर्च चलाना हमेशा चुनौतीपूर्ण रहा। आठ बच्चों के भरण–पोषण और उनकी जरूरतों को पूरा करना सीमित संसाधनों के बीच कठिन कार्य था, जिससे आर्थिक अस्थिरता लगातार बनी रहती थी।

ऐसी परिस्थिति में जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ना उनके जीवन में एक महत्वपूर्ण बदलाव लेकर आया। समूह के माध्यम से उन्होंने 60 हजार रुपये का ऋण लेकर बकरी पालन का कार्य शुरू किया, जो उनके लिए आय का एक नया स्रोत साबित हुआ। इस कार्य से धीरे–धीरे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होने लगा। उन्होंने इस ऋण को सफलतापूर्वक चुकाकर अपने आत्मविश्वास और वित्तीय अनुशासन का परिचय दिया। बाद में आवश्यकता पड़ने पर उन्होंने इलाज के लिए पुनः स्वयं सहायता समूह से 50 हजार रुपये का ऋण लिया, जिसे वह नियमित रूप से वापस कर रही हैं।

मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के तहत प्राप्त 10 हजार रुपये की सहायता राशि को उन्होंने अपने बकरी पालन के व्यवसाय में निवेश किया, जिससे उनकी आय में और वृद्धि हुई है। साथ ही उन्हें सदर अस्पताल, जमुई में सफाई कर्मी के रूप में चयनित किया गया। यह कार्य उनके लिए स्थिर आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन गया है। इससे उनके परिवार की आर्थिक स्थिति और मजबूत हुई है।

आज आशा देवी बकरी पालन और सफाईकर्मी के रूप में कार्य करते हुए अपने परिवार को बेहतर जीवन देने में सक्षम हो पायी हैं। वह प्रतिमाह दोनों आर्थिक गतिविधियों से 10 हजार रुपये से अधिक आय कर रही है। उनकी यह यात्रा यह दर्शाती है कि सामुदायिक सहयोग, योजनाओं का सही उपयोग और निरंतर प्रयास से कोई भी महिला आत्मनिर्भर बन सकती है।

मिट्टी के बर्तन से रजनी ने शुरू किया आत्मनिर्भरता का सफर

कटिहार जिले के कदवा प्रखंड अंतर्गत धपरसिया पंचायत के बनगमा गाँव की निवासी 42 वर्षीय रजनी देवी की जीवन यात्रा संघर्ष से आत्मनिर्भरता की कहानी प्रस्तुत करती है। अत्यंत निर्धन परिवार से आने वाली रजनी देवी पहले मजदूरी कर अपने परिवार का भरण–पोषण करती थीं। दिनभर की कड़ी मेहनत के बाद भी उनकी आय केवल 100 से 150 रुपये तक हो पाती थी, जिससे चार बच्चों की शिक्षा और घर का खर्च चलाना बेहद कठिन था।

जीवन में परिवर्तन का मोड़ तब आया जब उन्हें गीता जीविका स्वयं सहायता समूह के बारे में जानकारी मिली। स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद वह नियमित बचत और बैठकों में भाग लेना शुरू की। जीविका के माध्यम से उन्हें सामुदायिक सहयोग और वित्तीय अनुशासन की जानकारी मिली, जिससे उनके भीतर आत्मविश्वास विकसित हुआ।

स्वयं सहायता समूह से प्राप्त 20,000 रुपये ऋण से उन्होंने मिट्टी के बर्तन बनाने और बेचने का कार्य शुरू किया। इससे होने वाली आय से उन्होंने समय पर पूरा ऋण वापस कर दिया। इसके बाद पुनः ऋण लेकर उन्होंने एक गाय खरीदी और पशुपालन की शुरुआत की।

मिट्टी के बर्तन के व्यापार और गाय पालन से उनकी आय में निरंतर वृद्धि होने लगी। अब उनके परिवार की आर्थिक स्थिति पहले की तुलना में काफी बेहतर हो चुकी है। वह अपने बच्चों की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम हो रही हैं और उनके जीवन में स्थिरता आई है।

रजनी देवी अपनी इस सफलता का श्रेय जीविका स्वयं सहायता समूह को देती हैं और अन्य महिलाओं को भी जिन्होंने उन्हें स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के लिए प्रेरित किया।

जैविक खेती केवल एक विकल्प नहीं, आज की आवश्यकता है

जैविक खाद से उर्वर हुई सविता की बंजर जमीन

नवादा जिले के नारदीगंज प्रखंड में ननौरा पचायत के गोतराइन गाँव में रहने वाली सविता कुमारी 18 फरवरी 2015 को शंकर जीविका स्वयं सहयता समूह से जुड़कर अपने जीवन में परिवर्तन लायी हैं। सीमित संसाधनों के बावजूद असीमित दृढ़ संकल्प के साथ उन्होंने अपने समुदाय में सतत् बदलाव लाने की शुरुआत की है।

सविता दीदी के पास खेती के लिए पर्याप्त जमीन होने के बावजूद अधिक उपज नहीं हो पाती थी। खेती से आमदनी कम होने के कारण वह अपने परिवार की आवश्यक जरूरतों को भी पूरा नहीं कर पाती थी। उन्होंने अपने ससुर के इलाज के लिए स्वयं सहयता समूह से 30,000 रुपये ऋण लिया था। धीरे–धीरे उन्होंने यह ऋण चुका दिया। उसके बाद उन्होंने अपनी जरूरत के वक्त कई बार स्वयं सहयता समूह से ऋण लिया और समय पर चुकाया।

ईंटर तक शिक्षित सविता दीदी अपने गाँव में जीविका की मदद से ग्राहक सेवा केन्द्र का संचालन हेतु बैंक सखी के पद पर चयनित हुई। चयन के बाद इन्हें प्रशिक्षण दिया गया। ग्राहक सेवा केन्द्र संचालित कर उन्होंने जीविकोपार्जन गतिविधि की शुरूआत की।

एक बार ग्राम संगठन की बैठक में भी जीविका एवं सहयोगी संस्थाओं (प्रदान) द्वारा खेती के लिए जैविक खाद बनाने की जानकारी मिली, जिससे सविता दीदी प्रभावित हुई और इन्होंने जैविक खाद बनाने का निर्णय लिया। तब उन्होने बैंक सखी के पद से त्यागपत्र दी। उन्होंने कृषि उद्यमी के पद के लिए संकुल संघ में आवेदन दी। उनका क्षमता को देखते हुए उनका चयन कृषि उद्यमी के रूप में किया गया।

कई वर्षो तक उनके घर के पास स्थित 30 फीट लंबा एवं 20 फीट चौड़ी बंजर जमीन अनुपयोगी पड़ी थी। लेकिन जीविका से मिले उचित प्रशिक्षण और मार्गदर्शन से उन्होंने उस खाली जमीन में जैविक संसाधन केन्द्र की स्थापना करने का निर्णय लिया। यह पहल न केवल उन्हें रोजगार उपलब्ध करा रही है, बल्कि उनके गाँव में जैविक खेती को बढ़ावा दे रही है।

उन्होंने इस दिशा में यात्रा की शुरुआत की और जैविक संसाधन केन्द्र की स्थापना की। सुनियोजित प्रयासों से दस कंपोस्ट पिट बनाए गए और स्थानीय संसाधन गोबर का उपयोग कर उच्च गुणवत्ता वाली बर्मी कम्पोस्ट तैयार करना शुरू की। जैविक तरीकों को अपनाकर सविता दीदी न केवल अपनी आय सुनिश्चित कर रही है, बल्कि पर्यावरण के अनुकूल कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देकर पूरे समुदाय को लाभ पहुँचा रही है।

सविता दीदी प्रति चक्र में 15,000 किलोग्राम गोबर से 45–60 दिनों में 7500 किलोग्राम वर्मी कम्पोस्ट तैयार करती है, जिसे वह 12 रुपए प्रति किलो ग्राम की दर से बेच कर प्रतिचक्र में 90,000 रुपये की बिक्री करती है। इससे उन्हें प्रतिचक्र में तकरीबन 18,750 रूपये का लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार से एक साल में 6 चक्र पूरा कर वह लगभग 1,12,500 रुपये की कमाई कर लेती है।

उनकी योजना यहीं तक सीमित नहीं है। वह जैविक खाद का उत्पादन एवं बिक्रय कर रोजगार को और विविध बनाना चाहती है। उनका लक्ष्य एक ऐसा सतत् व्यवसाय मॉडल तैयार करना है, जिससे समुदाय को रासायनिक उर्वरकों की अपेक्षा जैविक खेती अपनाने के लिए प्रेरित करना है। इस पहल से बेहतर मिट्टी में स्वस्थ्य फसल सुनिश्चित हो सकेगा।

उनकी इस पहल का प्रभाव केवल उनके परिवार तक ही सीमित नहीं रही। जैसे–जैसे उनके इस कार्य की जानकारी फैल रही है, अन्य किसान भी जैविक विकल्पों में रुचि लेने लगे हैं। उनके लिए वर्मी कम्पोस्ट आज आय का मुख्य स्रोत बन चुका है। यह पहल अन्य लोगों को पर्यावरण अनुकूल खेती अपनाने के लिए प्रेरित कर रही है।

सविता दीदी की कहानी धैर्य, दूरदृष्टी और सामुदायिक प्रभाव की कहानी है, जो सही निर्णय से वह अपने गाँव की कृषि व्यवस्था को नया स्वरूप दे रही हैं। सविता दीदी अपने गाँव में एक रोल मॉडल बन गई है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

- संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार